

प्रारंभ

इसमें समाज में नारी और आदिवासी समाज से पृथिवी आवश्यित हो रही है। वह जब अदिवासी समाज की बेड़ियों और पृथिवी उत्तर चुकी है। आज का यथा और समाज की अवधारणा को समझने हुए दार्शनिक सम्बन्धी की राष्ट्राने की पृथी कीठिया कर रही है। अब लगता है कि नारी भी भीड़ मिथ्या है जो एकले अस्तित्व को बचने में लड़ती है। वह पृथी से हम बेड़ियों को प्रताप फेंकने के लिए उड़ा रही है जो आज कुछ दूष तक सक्त ही चुकी है। इस घटने में यथा कलिया वही प्रतिक्रिया साहित्यकार के अनुग्रह – ‘भार का पुरुष गने ही काढ़व का कढ़व बना रहे, स्त्री आपना गम्भीर शरित और यामर्ये पुरुष साधारण में लगा देती है। यीर में नीकों में कर लेती है। जल्दी खींचिये फोन, औपचारिक-अनीपचारिक, मुलाकते उसकी विनम्रता के अग्र हैं। हर भोजे पर वह गनट की भौति तेजार रहती है। रात दिया बजे के बाद जब पति उसे मीम मुग्हार से देखता है, कभी उसे अपना स्त्री होना चाह आता है।’

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करने हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है – जिन्होंने दृष्टि इस एक सत् में ठिकी है। जोनों कि मार्केटिंगों दृष्टि व्यव्याप्ति (उसकी आर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीर-धीर) उसके एक सर्वों से गड़क उठा यह लावा जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी और का अनुमत होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्विका पर दृष्टिलाली थी बेचार चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, वित्रसिख काढ़-फाढ़कर फेकती थी, दुता रगों में दीणों के ऊपर दूरत थे, बैठेन – स्त्री दीया पर करवटें बदलती थी (एक फजा बदलती हुए) और जान सो कि पुक्कारा मुंह नींध लेन का मन होता था (चूड़िया और आमूषण खनखाने हैं जो कलाई की आर देखती है। कुछ शाणों के बाद या पुक्कराई है, जैसे कुछ बाद आ रहा हो। हैंस पढ़ती है। आपने को समाजने की बेट्टा करती है उमग ने) वहाँ अनुभवी है प्रत्याप जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।

‘भारतीय समाज में स्त्री को दोषम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को कुप्रीती देती है। ये सारे विचार पुरुष कोन्दित सोच तक ही सीमित है।’

डॉ० वेदप्रकाश अभियान के अनुसार – ‘हिन्दू कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से एडजर्स्ट न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना चेहतर समझते हैं। ऊपराई (मन्द) भण्डारी ठेका (दिष्णु प्रभाकर) विकाश (कृष्ण

वलवेत वेद) श्री विष्णु (कृष्णपाल) और उपर्युक्त वापर योग – यथावत् यारी वह आजी ने जैसे वह याकृति के बहुजनों द्वारा विद्या गमा है। निष्ठाकार में कृष्ण का भूमि पक्षान् में वेद्यकार पति की उपासना भौतिकीय से वह यथावत् यारी है।’

जब यास्तीय नारी आपने भूमि को उपासना की तो वेदी है और पुरुष उसे प्राप्त आवश्यकान् इष्टानुष्ठान की तरीके में याता ही उसे वह भूमि की प्राप्ति करने का अविकार नहीं है। अपर पुरुष के प्रति पृथी वह यास्तीय होती है और पुरुष पृथी उसके प्रति समर्पित नहीं होता ही नारी उपासना यथा देवीपूजा का रूप धारण करके उपासों में वह उपासन के लिए उपासन की तिथि नहीं है जाती है, जिसी कृपा है, उसी ही विशेष है कविति, जो उपासनालील है अपर कोई उसकी यासनाओं के दामादों के लिए वह किस नामिन् कारी बनकर हूँ पड़ती है। अपर नारी कामप्र॒ ये विद्याई देती है तो उसके गीतर प्रतिशोध की जाता ही विद्याई है वह इसके लिए यही का रूप धारण कर लेती है अपर नारी के रूप से कुप्रीती है तो उसना ही वह प्रतिशोध मील लेती है।

आज के परिवेश में दार्शनिक सम्बन्धों में मानवान् के प्रवृत्ति कारण दिखाई दे रहे हैं। अपर पति-पत्नी की अविकारियी, यात्रा के मिल पा रही है तो वी उनके सम्बन्धों में मानवान् लगे जाते ही क्योंकि अपर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से यन्मुक्त नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्डा, दमित यासनाएँ उमग्न लगती है जिसके कारण के अन्य पुरुष को अपनी यासनाओं को साझेदार रामङ्गने लगती है और अपर पुरुष नायुक प्रवृत्ति का है तो उसकी नारी इक्काईं पृथी-पृथीकर रह जाती है जिसका विक्रिय इस नाटक में शीलवती-नामक का के माध्यम से दिखाया गया है जब औकाक जो उसका पति है का नायुक है जिसके कारण उन्हें काई सातान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों का मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है जो कि इस प्रकार है –

आ॒काक (तीव्र रवर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निमायी है मैन और पाच वर्ष तक मर्यादा निभान में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को विवरण इस नाटक में शीलवती और औकाक नामक पात्रों के माध्यम से विवरित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने अपने कचोटती है। परन्तु इन नारी जीजों के लिए उस पात्री औकाक

273

विद्युत विभाग के नामी अम लाइंग सर्व से तृष्ण जारी किए गए हैं। वह अब बोडीजारी रूपी वर्षायनों को बोडीजी अम भूमि वाला बुलते हैं। आपका यह सम्मान और सम्मान वो जनकारणों को दर्शाते हैं। यह विद्युत विभाग के वर्षायनों की नई दोहोरा का रही है। उसे जारी किए जानी चाहिए गया है जो उसके अधिकारों को अद्वितीय संवेदनीय है। यह मुख्य तरह इन बोडीजों को उत्तराधिकार के लिए तृष्ण रही है जो जाव बूथ एवं एक सम्प्रति हो जाती है। इस सम्प्रति के अन्तर्वाली विद्युतिकार साहित्यकार के अनुसार— यह का पुराव चले जी उत्तराधिकार का बद्ध वस्तु यह राजी जनका सम्पूर्ण बोडीज और वर्षायनों द्वारा जावास्तु में लाता रहता है। बोडी जी नीकरी भी कर रहती है। अन्तर्वाली साहित्य बोडी श्रीविजयार्थि—श्रीविजयार्थि भूतोवाले उसकी विद्युतियों के लाभ के। उन सीधे यह यह वर्षायन की बोडी विभाग रहती है। यह वस्तु वज्र के शब्द जब यह उसी वीक्षण भूतोवाले से इच्छाता है तभी उसे जपना राजी नीकरा वायर रहता है।

दण्ड-युक्त के लकड़ी का विश्वर करने हुए निर्दिष्ट
समाजकान्त्रिकों की छाती है। जिसने युपरि इस एक रात में लिखी है : ही ली
ये सामाजिकतानों के सम्बन्धों का अधिकारी भूत देखती रहती है। एवं जीव
वहाँ है जो—जो उत्तर एक इयाही से बहक रहा था वह जब जीव
विश्वर समाज से इस राति न देखा हुआ था। जिसकी और का अनुच्छेद
है : उसे कहीं कृप्या नहीं चाहा था। ऐसा बहुत नहानारीको पर
झूँझाताही वो बहुत बहुताक को आकाश नहीं लिजता वह जित्तानिया
जाक—जाकदर कोकती वो दूजे लोगों से दूल्हा का नाम दूल्हा वे बहौल—
वो जीवा यह करवाई बदतली वो एक बड़ी बहुत हुए। जीव जान ले दिया
युक्त हुई नम लेते थे। बहुत दूल्हा था। दूल्हेण और बहुत्यन खेदखानी
है तो करवाई वो जीव देखती है। कुछ दूल्हा के बाद या नुस्कानाती है
जीव कृप्या यह आ रहा हूँ। हेतु भली है। आपन का सम्बन्धजन का सेवा
करती है दूल्हा से बहुत बहुतकी है ग्रामीण जात्यान है कि कभी कहीं कोसि
ओं का जनन घटनी थीनीय—

सारलोक समाज से लड़ी की अवधि कर्जों दिखा गया है तो वही एक सत्यानुरिक भूमन है। दहन का चुनौती इसी है। ये लोग विभाग
नुस्खे की दिल सब तक ही दीवारें हैं।

त्रिभुवन विद्यालय के अध्यक्ष - "हिन्दी कालानीज" में इस अधि-कालानीज के अध्यक्ष तथा उपर्याप्ति जाहीं एवं बृहदी से एकलानीज एवं एक यात्री को विभागी व एक युवारे से उत्तम विद्या विद्यार्थी द्वारा प्राप्त होना चाहिए।

ਕਲਾਰੋਸ ਮੈਂਦ) ਅਤੀ ਵਿਖੇਤਰੀ (ਪ੍ਰਾਚੀਨਤਾ) ਅਤੀ ਸ਼ਾਹੀ (ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਸ਼ਾਹੀ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਵਾਲੀ ਹੈ।

जहाँ यात्रीय नहीं बैठते तो वहाँ वहाँ का विभाग का दृष्टि
लेही है और पुरुष वहाँ उस अस्थान समझने का उपयोग करते हैं। वहाँ
नहीं जा पाता तो वहाँ वहाँ जीवन का अधिकार नहीं।
अब पुरुष के छोटे पूछे वहाँ स्वतंत्रता देती है और पुरुष का वहाँ
उसके प्रति स्वतंत्रता नहीं होती तो वहाँ उपरान्त वहाँ दूसरा वहाँ
जैसे स्वतंत्र करके उसकी जीवन की ओर चलावें का इच्छा करता है।
वहाँ है जिसकी व्युपरि वहाँ जीवन की स्थान है क्योंकि वहाँ वहाँ
संवेदनशील है अतएव कोई उसकी साधारणता के अस्थानकी व्यापक
वहाँ विश्व व्यापक कानून व्यापक वृद्धि प्रक्रिया है। अतएव वहाँ कुछ वहाँ
से विचारित होती है वहाँ विचार विचार की व्यापक से विचार है।
इसकी विवरण का जैव व्यापक का जीवन है वहाँ वहाँ का जीवन है।

जीवकांक (दृष्टि रखने में) विद्युतिका बहाव की सुधार संघर्षों का फल है। और जलवटी (आवश्यक संविधान) ही ऐसे अधिक विभिन्न तरफ संघर्षों का फल है।

का सम्बन्धी का विवर होता है जिसमें अविवाहित महिला परिवार के सम्बन्ध में विवर दिया होता है औ उसके साथ कुछ अधिक विवर भी दिया जाता है।

‘सूर्य की अनिताम किरण से सूर्य की पहली किरण तक’

नाटक में दाम्पत्य वित्तन

13

पवित्रा देवी

सारांश

वर्तमान समाज में नारी अब आर्थिक रूप से पूर्णत आगमित हो गई है, वह अब लड़ियारी रुपी परम्पराओं की बोडीजों अब पूर्णत उतार चुकी है। आज का समय और समाज की अवधारणा को समझते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी चीजें मिथ्या हैं जो उसके अस्तित्व के बढ़ने से रोकती हैं। वह मुझे से इन बेड़ियों को उतार फेकने के लिए तड़प रही थी जो आज कुछ हद तक सफल हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार – ‘भर का पुरुष मले ही कारबच का कददू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह सचालन में लगा देती है। वीव में नौकरी भी कर लेती है। जरूरी मीटिंग, फोन, औपचारिक-अनौपचारिक, मुलाकतें उसकी दिनधर्यों के अम हैं। हर भोवू पर वह गनट की भाँति तैयार रहती है। रात दरा बजे के बाद जब पति उसे मौम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना याद आता है।’

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है – जितनी तुष्टि इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानौकिरका दूँ महत्व? (उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर बढ़ती है, धीरे-धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लाला जो वित्तने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिराकी आँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। यिना बात महत्तरिका पर छुँझलाती थी बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, वित्तिय फाड़-फाड़कर फेकती थी, दुर रामों में वीणा के तार टूटते थे, बेवैन – सी शैया पर करवटे बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मूँह नोच लेने का मन होता था (चूड़िया और आभूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को समालने की चेष्टा करती है उमग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।

‘भारतीय समाज में स्त्री को दोषम दर्जा दिया गया है नारीवाद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को चुनौती देती है। ये सारे विचार पुरुष केन्द्रित सोच तक ही सीमित हैं।’

डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ के अनुसार – ‘हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जाहीं एक दूसरे से ‘एडजस्ट’ न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। कॉचाई (मनू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकांग (कृष्ण

वल्लेन वेव) और निश्चय (मुलायुषण) आदि कहानियों पर वे राण यीन-सम्बन्ध चाहे वह शारीर से पूरे ही या शारीर के बाहर सहजता से लिखा गया है। मिकोफ़ में पत्नी को कर – एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नीति संभालना बनती है।’

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर के तरह ले ली है, और पुरुष उसे प्रेम, आरथा, समर्पण, ईमानदारी और जीवनी की दृष्टि से नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक भूमिका उसके प्रति समर्पित की होता तो नारी उसके साथ दैवीय शक्ति का रूप धारण करके उसको गौतम के पाट उत्तरने के लिए तैयार होती है, जितनी तुष्टि है, उक्ती ही वेशमें ही क्योंकि नारी वक्ता ही सोवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दमानाजी करता है तो वह किर नामिन, काली बाबार टूट पड़ती है। अगर नारी को मल भाङ्के से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पुरुष से बूढ़ी है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिलिखियाँ, सोच नहीं मिल पा रही हैं तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से रानुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुछ दमित वाराणाई उभरने लगती है जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को राझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुराक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएं तूर-कूर होकर रह जाती है जिसका वित्तन इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुराक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक (तीव्र स्वर में) वैवाहिक वन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है। शीलवती (आवेश से) निभायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों का वित्तन इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से वित्तित किया गया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको कचोटती है। परन्तु इन सारी चीजों के लिए उस पति ओक्काक



सारांश उत्तमन संवाज में नारी अब अतिक रूप से पूर्ण है। आचरितों
में से कई हैं जहाँ अब सहिताई सभी परामर्शदातों की बोहोगी अब पूर्ण
पूर्ण रूप से है। अब का समय और समाज की अवधारणा की समझते
लगते हैं कि लाली लीजे विद्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ाने से
लाली है। वह पूरी से इन बोहोगों को उत्तर पाने के लिए चड़ा रखी
ली जो आज कौन है तक सचाल हो पूरी है। इस सर्वांग में समझ
का नियम वही ब्रह्मिक समितिकार के अनुसार - भर का पुरुष गते
ही कालीन कर करवू बना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शरीर और सामग्री
पूर्ण संवाजन में लगा रही है। छीं में नीकरी भी कर लेती है। जरुरी
अगर फौन, औपचारिक-अपौपचारिक, पुलकर्ण उसकी दिनचर्या के
अग है। हर मोर्चे पर पह गम्भीरी गति तैयार रहती है। सब दस बजे
की बाद जब पति उसे मृत्युहार से बचता है, तभी उसे अपना स्त्री
होना याद आता है।

स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका
उन्नदकाना जी कहती है— जिसनी हुपि इस एक रूप में गिरी है। बोलो
कि मार्गेंकिसको है महल? (उसकी ओर देखती रहती है। एक ओर
इही है, छीर-धीर) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लाजा जो
कितने तालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँख का अनुग्रह
होता था जब कहीं कुछ मही भागा था। बिना बात महत्विक पर
होता था जब कहीं कुछ मही भागा था। वित्रलिख
हुँडालाती ली बेतारे चब्बाक को आहार नहीं मिलता था, वित्रलिख
की जीवा पर करते बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि
कुम्हारा है नोच लेने का मन होता था (नृडिया और अभूषण खनखानों
हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुरक्करती है,
जैसे कुछ याद आ रहा है। हँस पड़ती है। अपने को सागालने की चेष्टा
करती है उपर से) बहुत अनुग्रामी है प्रतोष जानता है कि कव, कहीं कैसे
और क्या करना चाहिए।

भारतीय समाज में स्त्री को दोषम दर्जा दिया गया है
नारीबद पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को कुनौनी देती है। ये सारे विचार
पुरुष कोन्द्रित सोच तक ही रोपित है।

हूँ वेदप्रकाश अमिताम के अनुसार - 'हिन्दी कहानियों में
ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलें जहाँ एक दूसरे से
एडजस्ट न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना चेहतर
समझते हैं। कैंचाई (मन्दू भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण)

(बलवेत गेव) और निष्ठाय (कुम्हारा) आदि कहानियों पर पर-जून,
राथ गीग-समक्षना चाहे वह शादी से पूर्ण हो या शादी के बाद प्रत्यक्ष
सहजता से लिखा गया है। गिरोफ़ भैं पत्नी को पर-पुरुष के
एकान्त में देखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक नई धर्म
संघर्षना करती है।

जब नारीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह उन्हें
लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आरथा, समर्पण, ईमानदारी, ये सारे जो
नहीं दे पाता वो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नारी
अगर पुरुष के पति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिग्रह
उसके पति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके राथ दैवीय शक्ति के
रूप धारण करके उसको गीत के घाट उतारने के लिए तैयार भी हैं
जाती हैं, जितनी चुप है, उसनी ही वेशम है क्योंकि नारी वडी है
सरोदननीती है अगर कोई उसकी गवानाओं के दग्गावाजी करता है तो
वह किर नामिन, काली बनकर ढूट पड़ती है। अगर नारी कोपल भाव
से दिखाई देती है तो उसके गीतर प्रतिशोध की ज्याला भी दिखाई देती
है वह इसके लिए चढ़ी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूरा
रूप से झूँपती है तो उसना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दामनत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक
कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, साच नहीं
मिल पा रही हैं तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है।
क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है
तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती हैं जिसके कारण वह
अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और
अगर पुरुष नपुराक प्रवृत्ति का है तो उसकी रासी इच्छाएँ चूर-चूर
होकर रह जाती हैं जिसका विभ्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र
के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उराका पति है वह
नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई रातान नहीं होती और दोनों पात्रों
को समाज की वातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीडित एक स्त्री
होती है, जो कि इस प्रकार है—

ओक्काक (तीव्र रवर में) वैवाहिक वन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।
शीलवती (आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने
में उतना सन्तोष नहीं मिला,

इन सम्बन्धों को विभ्रण इस नाटक में शीलवती और
ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से विभ्रित किया है। जब शीलवती
को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको
क्षोटती है। परन्तु इन रासी वीजों के लिए उस पति ओक्काक

यह अंत में समाज के नारी अव अधिकारों के साथ सम्बन्धित है। यह अव अधिकारों की परम्पराओं की विविधता अव पूर्णता और गहराई से वह अव अधिकारों की परम्पराओं की विविधता अव पूर्णता उत्तार पूर्वी है। आज का समाज और समाज की अवगतरणों की समझते हुए यामात सम्बन्धों की समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे समझता है कि नारी लौटे चिन्ह हैं जो उसके अवलित्य को बढ़ाने से लौटती है; यह दूरी से इन विविधतों की उत्तार प्रौद्योगिकी के लिए तड़प रही है जो आज कुछ हट एक सकात हो चुकी है। इस सन्दर्भ में ममता कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार - 'पर का पुरुष भले ही कालज का कदम देना रहे, स्त्री अपना सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य यूह सचालन में लगा देती है।' यीदू में नौकरी भी कर लेती है। जल्दी मीठिंग फोन, औपचारिक-अनौपचारिक मुलाकतें उसकी दिनरात्रि के अंग हैं। हर नौर्स पर वह गम्भीर भी भौति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पहि उसे मौस मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना स्त्री होना चाह आता है।'

सत्ती-पुल्लों के सम्बन्धी पर विचार करते हुए लेखिका चन्द्रकान्ता जी कहती है— जिसकी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोलो कि मानूँ किसको दूँ महत्व? (उसकी ओर देखती रहती है। एक और बढ़ती है धीरे-धीरे) उसके एक स्पर्श से भड़क उठा यह लाया जो कितामे सालों से इस शरीर में दबा हुआ था। जिसकी आँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाता था। बिना बात महत्तरिका पर दृश्यताती थी बेघारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, यित्रलिख पाड़—पाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में दीणा के तार टूटते थे, बेचैन—री शैया पर करवटें बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि तुम्हारा मैंह नौच लेने का मन होता था (चूड़िया और आनूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ क्षणों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हैस पहली है। अपने को संमालने की चेष्टा करती है उमंग से) बहुत अनुभवी है प्रतोष जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।

‘भारतीय समाज में स्त्री को दायर दर्जा दिया गया है नारीवाट पारम्परिक ज्ञान और दर्शन को बुनौती देती है। ये सारे विचार पूर्ण कोन्सिट्रेट सोच तक ही सीमित हैं।’

लौ० वेदप्रकाश अग्निताम के अनुसार - 'हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिले जहाँ एक दूसरे से एकजुट्ट न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बहतर समझते हैं। कौचार्ष (मन्त्र भण्डारी) ठेका (विष्णु प्रभाकर) त्रिकोण (कृष्ण

बलदैव वेद) और निष्ठाय (कुलभूषण) आदि कहानियों पर जो साध यीन—समवन्य था ही वह शादी से पूर्व ही या शादी के बाद सहजता से भिखा गया है। गिकाफ़ में पत्नी को पर एकान्त में दखकर पति की उदासीन प्रतिक्रिया से एक लड़की संभावना बनती है।²

जब भारतीय नारी अपने पति को परम्परावर ले लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण, इमानदारी दे रखता है, नहीं दे पाता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक पूर्ण उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके साथ टैक्सिंग रूप से रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए जाया जाती है, जितनी चुप है, उतनी ही बेशर्म है क्योंकि नारी वही सवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दग्धाबाजी करता है, वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी काष्य से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्याता भी दिखाई देती है वह इसके लिए घंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी का रूप से छूटती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले सकती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव का अभ्यूत कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिनविधीय मात्रा में मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएं उभरने लगती हैं जिसके कारण इन्हें अन्य पुरुष को आपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है जब अगर पुरुष नपुसक प्रवृत्ति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ कूट-कूट होकर रह जाती हैं जिसका चित्रण इस नाटक में शीतलवती नानक का कर्म के माध्यम से दिखाया गया है जब ओककाक जो उसका परिवार है उसके नपुसक है जिसके कारण उन्हें कोई सतान नहीं होती और दाना पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है जो कि इस प्रकार है -

ओकाक : (तीव्र स्वर में) वैयाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।
शीतलता : (आवेश से) निभायी है मैंने और पॉच वर्ष तक मर्यादा निभाने
में उतना सक्तोप नहीं मिला

इन सम्बन्धों को विवरण इस नाटक में शीलवती और ओक्काक नामक पात्रों के माध्यम से विविधत किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपक कघोटती है। परन्तु इन सारी धीजों के लिए उस परि ओक्काक

सारांश

वर्तमान समाज ने नारी औ अधिकारों की पूर्णता आवश्यकता हो गई है। वह अब स्थिरादी रूपी परम्पराओं की बेड़ियाँ अब पूर्णता उतार देती हैं। जाज का समय और समाज की अधिकारण को समझाते हुए दामन रामदानी को समझने की पूरी कोशिश कर रही है। उसे लगता है कि सारी लीज मिथ्या है जो उसके अस्तित्व को बढ़ने से रोकती है। वह मुग्गों से इन बेड़ियों को उतार कोकने के लिए तड़प रही थीं जो अज्ञ कुछ हड तक राफत ही देती हैं। इस सन्दर्भ में भवती कालिया वही प्रतिष्ठित साहित्यकार के अनुसार - पर का पुल्य भले ही काउच का कदम बढ़ा रहे रखी अपना राम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य गृह संचालन में लगा देती है। बीच में नीकरी भी पर लेती है। जरुरी कीटिक, फोन औपचारिक-अनीपचारिक, नुलाकरी उसकी दिनधर्ती के लिए है। हर सोर्च पर वह गनट वीं भौति तैयार रहती है। रात दस बजे के बाद जब पति उसे मीम मुनहार से देखता है, तभी उसे अपना रखी होता काद आता है।

होना चाह आता है। स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए लेखिका घन्टकानना जी कहती है— जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है। बोला कि नहीं? विस्तारों में महाद्य? (उसकी ओर देखती रहती है। एक और बढ़ती है, पीरे-पीरे) उसके एक स्पर्श से मड़क उठा यह लाला जो छिपने सालों से इस गरी में दबा हुआ था। जिसकी भाँच का अनुभव होता था जब कहीं कुछ नहीं भाला था। दिन भात महसूरिका पर हुँझलती थी देहरे छँडवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख काढ़-फाढ़कर फेंकती थी, दुत रागों में दीणा के तार टूटते थे, देवैन—सी रीया पर करवटे बदलती थी (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान ली कि तुम्हारा मुँह नोंच लेने का मन होता था (चूँकिया और आमूषण खनखानते हैं तो कलाई की ओर देखती है। कुछ दिनों के बाद या मुस्कराती है, जैसे कुछ याद आ रहा हो। हँस पड़ती है। अपने को सभालने की बोटा करती है उमर से) बहुत अनुभवी है प्रताप जानता है कि कब, कहाँ कैसे और क्या करना चाहिए।

‘भारतीय समाज में स्त्री को दौधम दर्जा दिया गया है नारीवाद परम्परिक ज्ञान और दर्शन को बुनौती देती है। ये सारे विचार पृष्ठ के द्वितीय साच तक ही सीमित हैं।’

डॉ० वेटप्रकाश अमिताभ के अनुसार - "हिन्दी कहानियों में ऐसे पति-पत्नियों के अनेक उदाहरण मिलें जहाँ एक दूसरे से एडजस्ट न कर पाने की स्थिति में वे एक दूसरे से अलग होना बेहतर समझते हैं। जैवाहू (मनु नानडारी) ठेका (विष्णु प्रमाकर) त्रिकोण (कप्तान)

बलदेव देव) और निरचय (कुलगूपण) आदि कहानियों पर पर-पूर्ण का साथ यौन-समवत्ता चाहे वह शादी से पूर्व ही या शादी के बाद प्रकल्प सहजता से सिखा गया है। यिकोक में पहली को पर-पूर्ण का साथ एकान्त में देखकर पति की उदारीन प्रतिक्रिया से एक नवीन धारणा घटावना होती है।³

जब भारतीय नारी अपने पति को परमेश्वर की तरह पूजन
लेती है, और पुरुष उसे प्रेम, आस्था, समर्पण इमानदारी या नारे में
नहीं है प्राप्ता तो उसे यह रूप भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। नारी
अगर पुरुष के प्रति पूरी तरह समर्पित होती है और पुरुष एक प्रतिष्ठित
उसके प्रति समर्पित नहीं होता तो नारी उसके माध्यम से गति का
रूप धारण करके उसको मौत के घाट उतारने के लिए तैयार होती है।
जितनी भूमि है उतनी ही वेश्वर्म है वर्णोंके नारी वही है
संवैदेनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं के दग्धाबाजी करता है को
इह फिर नागिन काली बनकर ढूट पड़ती है। अगर नारी कमल गाढ़ा
से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्ञाता भी दिखाई देती
है वह इसके लिए चढ़ी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पुरुष
रूप से डूबती है तो उतना ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे हैं। अगर पति-पत्नी की अभिरुचियाँ, साचे नहीं मिल पा रही हैं तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है। क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुछ दम्भित वासनाएँ उभरने लगती हैं जिसके कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं को साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुसक प्रवृत्ति का है तो उसकी रारी इच्छाएँ धूर-धूर होकर रह जाती हैं जिसका विक्रिया इस नाटक में शोलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जब ओक्काक जो उसका पति है वह नपुसक है जिसके कारण उन्हें कोई सतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्ञादा पीड़ित एक स्त्री ही जो कि इस प्रकार है -

आकाश का दूर प्रसार है।
आकाशक (तीव्र स्वर में) वैदाहिक वन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।
शीलवती (आवेश से) निभायी है मैंने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने
में उतना सन्तोष नहीं मिला।

इन सम्बन्धों को विभाग इस नाटक में शीलवती और ओककाक नामक पात्रों के माध्यम से विचित्रित किया है। जब शीलवती को नारी का पूर्ण अस्तित्व नहीं मिल पाता तो वह अपने आपको क्योटती है। परन्तु इन सारी घीजों के लिए उस परि ओककाक